॥ श्री गणेशाय नमः॥

राहु

राहु का स्वरूप :- राहु का मुख भयंकर है। ये सिर पर मुकुट, गले में माला तथा शरीर पर काले रंग का वस्त्र धारण करते हैं। इनके हाथों में क्रमशः -तलवार, ढाल, त्रिशूल और वरमुद्रा है। सिंह के आसन पर पर आसीन हैं। राहु का रथ अन्धकाररूप है। इसे कवच आदि से सजाये हुए काले रंग के आठ घोड़े खीचते हैं। राहु की माता का नाम सिंहिका (असूया) है, जो विप्रचित्ति की पत्नि तथा हिरण्यकशिपु की पुत्री थी। राहु के सौ और भाई थे। जिस समय समुद्र मंथन के बाद भगवान् विष्णु मोहिनी रूप में देवताओं को अमृत पिला रहे थे, उसी समय राहु देवताओं का वेष बनाकर उनके बीच में आ बैठा और देवताओं के साथ उसने भी अमृत पी लिया। परन्तु जब चन्द्रमा और सूर्य ने उसकी पोल खोल दी। अमृत पिलाते-पिलाते ही भगवान् ने अपने सुदर्शन चक्र से उसका सिर काट डाला। अमृत संसर्ग होने से वह अमर हो गया और ब्रह्मा जी ने उसे ग्रह बना दिया।

ग्रहों के साथ राहु भी ब्रह्मा की सभा में बैठते हैं। ग्रह बनने के बाद भी राहु वैर-भाव से पूर्णिमा को चन्द्रमा और अमावस्या को सूर्य पर आक्रमण करता है।

राहु ग्रह :- कन्या राशि का स्वामी है, वृष के १५ अंश पर उच्च तथा वृश्चिक के १५ अंश पर नीच का होता है। मूलत्रिकोण राशि कुम्भ है। महादशा १८ की होती है। राहु ४२ वें वर्ष में भाग्योदय कारक होता है।

राहु ग्रह :- गोचर में जन्म राशि से १, ३, ६,९ और ११ वें स्थानों में स्त्री, पुत्र, द्रव्यादि की प्राप्ति एवं विज्य करता है तथा २, ४, ५, ७, ८, १० व १२ वें स्थान में गृहकलह, आर्थिक कष्ट, मानसिक अशान्ति देता है।

राहु व्रत विधि :- शनिवार के दिन प्रातः सूर्योदय से पहले ब्रह्ममुहुर्त में उठकर नित्यकर्म करने के बाद राहु स्तोत्र का पाठ और राहु मन्त्र का यथाशक्ति जप करे, जप के लिए माला शमी या रुद्राक्ष की होनी चाहिए। सूर्यार्घ्य प्रदान कर, दिन में १२ से ३ बजे के अन्दर हल्दी-नमक रहित खिचड़ी का भोजन करे। सूर्यास्त के बाद अन्न जल ग्रहण न करे। रविवार के दिन सूर्यार्घ्य देने के बाद व्रत का पारण करना चाहिए।

राहु की अनुकूलता के लिए मृत्युंजय-जप एवं नागपूजन करना चाहिये।

दान पदार्थ :- सप्तधान्य, नीलवस्त्र, काली गाय, बकरी, तलवार, अभ्रक, गोमेद, उड़द, तिलसहित ताम्रपात्र, वरण, दक्षिणा आदि।

धारणार्थ रत्न :- गोमेद।

धारणार्थ औषधि :- श्वेत चंदन।

देवता :- राहु ग्रह के अधिदेवता काल तथा प्रत्यधिदेवता सूर्य हैं।

ध्यान :- नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी करालचक्रः करवाल शूली।
चतुर्भुजश्चक्रधरश्च राहुः सिंहासनस्थो वरदोऽस्तु मह्यम्॥
(करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः। नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते॥)

३६ राहु यन्त्रम्

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

तन्त्रसारोक्त मन्त्र :- ॐ राँ राहवे नमः। जपसंख्या १८,०००

तन्त्रोक्त बीजमन्त्र :- ॐ भ्राँ भ्रीँ भ्रौँ स राहवे नमः।

बीजमन्त्र (पञ्जिका):- ॐ ऐँ ह्रीँ राहवे नमः।

राहु गायत्री :- ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

पौराणिक जप मन्त्र :- अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥

वैदिकमंत्र विनियोग [१]:- ॐ कयानश्चित्र इति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः गायत्रीछन्दः राहुर्देवता कयान इति बीजं शचिरिति शक्ति राहुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ न्यास [२]:- ॐ वामदेवऋषये नमः शिरसि।
ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।
ॐ राहुदेवतायै नमः हृदये।
ॐ कयान इति बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ शचिरिति शक्तये नमः पादयोः।

करन्यास [३]:- ॐ कयान इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ चित्र इति तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ आभुव इति मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ दूतीसदावृध इत्यनामिकाभ्यां नमः।
ॐ सखाकया इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ शचिष्ठयावृता इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास [४]:- ॐ कयान इति हृदयाय नमः।
ॐ चित्र इति शिरसे स्वाहा।
ॐ आभुव इति शिखायै वषट्।
ॐ दूतीसदावृध इति कवचाय हुम्।
ॐ सखाकया इति नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ शचिष्ठयावृता इत्यस्त्राय फ़ट्।

वैदिक जप मन्त्र :- ॐ कया नश्चित्र आ भुव दूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥
॥ ॐ राहवे नमः॥

श्री राहुस्तोत्रम्

विनियोग- अस्य श्रीराहुस्तोत्रस्य वामदेवऋषिः गायत्री छन्दः राहुर्देवता राहुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

राहुर्दानव मन्त्री च सिंहिका-चित्त-नन्दनः।
अर्धकायः सदा क्रोधी चन्द्र-आदित्य-विमर्दनः॥ १॥
रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः। ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यभिलाषकः॥ २॥
कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकण्ठहृदयाश्रयः। विधुंतुदः सैहिंकेयो घोररूपो महाबलः॥ ३॥
ग्रहपीडाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः। पञ्चविंशतिनामानि स्मृत्वा राहुं सदा नरः॥ ४॥
यः पठेन्महती पीडा तस्य नश्यति केवलं। आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशूंस्तथा॥ ५॥
ददाति राहुस्तस्मै यः पठते स्तोत्रमुत्तमम्। सततं पठते यस्तु जीवेद्वर्षशतं नरः॥ ६॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणोक्तं राहुस्तोत्रम् सम्पूर्णम्॥

श्रीराहुकवचम्

अस्य श्रीराहुकवचस्य चन्द्रमाऋषिः अनुष्टप्छन्दः रां बीजं नमः शक्ति स्वाहा कीलकं राहुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

प्रणमामि सदा राहुं शूर्पाकारं किरीटिनम्। सैंहिकेयं करालास्यं लोकानामभयप्रदम्॥ १॥
नीलांबरः शिरः पातु ललाटं लोकवंदितः। चक्षुषी पातु मे राहुः श्रोत्रे त्वर्धशरीरवान्॥ २॥
नासिकां मे धूम्रवर्णः शूलपाणिर्मुखं मम। जिह्वां मे सिंहिकासूनुः कंठं मे कठिनांघ्रिकः॥ ३॥
भुजंगेशो भुजौ पातु नीलमाल्याम्बरः करौ। पातु वक्षःस्थलं मंत्री पातु कुक्षिं विधुंतुदः॥ ४॥
कटिं मे विकटः पातु ऊरू मे सुरपूजितः। स्वर्भानुर्जानुनी पातु जंङ्घे मे पातु जाड्यहा॥ ५॥
गुल्फौ ग्रहपतिः पातु पादौ मे भीषणाकृतिः। सर्वाण्यंगानि मे पातु नीलश्चन्दनभूषणः॥ ६॥

राहोरिदं कवचमृद्धिदवस्तुदं यो भक्त्या पठत्यनुदिनं नियतः शुचिः सन्।
प्राप्निति कीर्तिमतुलां श्रियमृद्धिमायुरारोग्यमात्मविजयं च हि तत्प्रसादात्॥ ७॥

॥ इति श्रीमन्महाभारते द्रोणपर्वण धृतराष्ट्रसंजयसंवादे राहुकवचम् सम्पूर्णम्॥

---

[१] **विनियोग**-- विनियोग करते समय एक छोटे ताम्बे के चम्मच या खर या आम के पत्ते से लुटिया में से गंगाजल युक्त पानी उठाए रखे और विनियोग के मन्त्र का अन्तिम शब्द **"विनियोगः"** बोलते समय चम्मच का पानी एक छोटी प्याली या प्लेट में उडल दे इस चम्मच को **"आचमनी"** कहते हैं।

[२] **अथ न्यासः** --तत्त्व मुद्रा से अर्थात् मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ के अग्र भाग को मिलाकर सिर आदि का स्पर्श करे।

ॐ ..... नमः शिरसि।
ॐ ..... नमः मुखे।
ॐ ..... नमः हृदये।
ॐ ..... नमः गुह्ये।
ॐ ..... नमः पादयोः।

[३] **करन्यासः** करन्यास एक ही समय में दोनो हाथों से करे।

ॐ ..... ऽङ्गुष्ठाभ्यां नमः। (तर्जनी द्वारा अँगुठे के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... तर्जनीभ्यां नमः। (अँगुठे से तर्जनी के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... मध्यमाभ्यां नमः। (अँगुठे से मध्यमा के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... ऽनामिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से अनामिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से कनिष्ठिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे)

४ **हृदयादिन्यासः** दाहिने हाथ की पांचो अंगुलियों से हृदय आदि का स्पर्श करे।

ॐ ..... हृदयाय नमः।

ॐ ..... शिरसे स्वाहा।

ॐ ..... शिखायै वषट्।

ॐ ..... कवचाय हुम्। (दोनों भुजा अर्थात् कन्धे के पास स्पर्श करे)

ॐ ..... नेत्रत्रयाय वौषट्। (दोनों नेत्रों और फिर ललाट के मध्य भाग का स्पर्श करे)

ॐ ..... ऽस्त्राय फ़ट्। (दायें हाथ को सर के ऊपर बायीं ओर से पीछे ले जाकर सर के दायीं ओर से आगे की ओर लाये, फिर बायीं हाथेली पर दायें हाथ की तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों से ताली बजाये)

Please send corrections to pawan2303@gmail.com